देश विदेश की लोक कथाऐं — गीदड़ ः

चालाक गीदड़

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Chalak Geedad (Cunning Jackal)
Cover Page picture : Jackal
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5
चालाक गीदड़ 7
1 भेड़िया और गीदड़ और मक्खन का डिब्बा 9
2 गीदड़ और बन्दर 18
3 चीता, बकरा और गीदड़ 22
4 एक शेर, एक गीदड़ और एक आदमी 25
5 चीता और गीदड़ 29
6 गीदड़ और भेड़िया 39
7 आदमी और सॉप 41
8 शेर और गीदड़ 46
9 गीदड़ और मगर 51

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

चालाक गीदड़

गीदड़ या सियार बहुत सारे देशों की बहुत सारी लोक कथाओं का हीरो है। भारत में गीदड़ अक्सर डरपोक जानवर का रोल करता है पर फिर भी बहुत सारे देशों में वह होशियार जानवरों में गिना जाता है। यह तुम इन कहानियों को पढ़ कर ही पता चला सकते हो।

गीदड़ और शेर की भी बहुत सारी कहानियॉ हैं। इस पुस्तक में गीदड़ की शेर के साथ वाली कहानियॉ नहीं दी जा रहीं। हम केवल वही कहानियॉ दे रहे हैं जो उसकी दूसरे जानवरों के साथ हैं।

इस पुस्तक में हम गीदड़ की चालाकी कहानियॉ दे रहे हैं। ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 भेड़िया और गीदड़ और मक्खन का डिब्बा[1]

एक बार एक भेड़िया और एक गीदड़ एक सड़क के किनारे किनारे चले जा रहे थे। सड़क लम्बी थी और वे लोग भी काफी समय से चल रहे थे।

तभी उनके पास से एक मोटर गाड़ी गुजरी। उस गाड़ी में बहुत सारे डिब्बे[2] भरे हुए थे इसलिये वह उनके बोझ तले आवाज करती जा रही थी।

गीदड़ कुछ सोचते हुए बोला —"मैंने ऐसे डिब्बे पहले भी देखे हैं। ये डिब्बे तो मक्खन के हैं।"

यह सुन कर भेड़िये के मुँह में पानी आ गया। वह सपने देखते हुए बोला — "हूँ मक्खन? तब तो मुझे इनमें से एक डिब्बा लेना ही पड़ेगा।"

गीदड़ बोला — "मेरे दोस्त, इसकी कोई वजह नहीं कि हम उसको ले नहीं सकते। हम लोग ऐसा करेंगे कि तुम सड़क पर बीच

---

[1] Wolf and Jackal and the Barrel of Butter – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by Pieter W Grobbelaar. Translated by Darrel Bristow-Bovey. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com .
Most wolf and Jackal stories are from Flemish (Belgium) tales but they are acclimatized so much in South African environment that they have now become South African folktales.

[2] Translated for the "Barrel". A barrel, a cask, or tun is a hollow cylindrical container, traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. Traditionally, the barrel was a standard size of measure referring to a set capacity or weight of a given commodity. For example, in the UK a barrel of beer refers to a quantity of 36 imperial gallons. Wine was shipped in barrels of 31 US gallons. See its picture above.

में लेट जाओ, बिल्कुल बिना हिले डुले और चुपचाप, जैसे कि तुम मर गये हो।

फिर जब किसान तुम्हें वहॉ मरा पड़ा देखेगा तो तुमको उठा कर अपनी गाड़ी में लाद लेगा। अपनी गाड़ी में लाद कर वह आगे चल देगा तब तुम उन डिब्बों में से एक डिब्बा चुपचाप से लुढ़का देना।

मैं सड़क के पास ही घास में छिपा रहूँगा और उसको देखता रहूँगा। जैसे ही तुम उस डिब्बे को नीचे गिराओगे मैं उसको ले जा कर कहीं छिपा दूँगा। बाद में हम उसे खा लेंगे।"

भेड़िया बोला — "तुम्हारी यह तरकीब तो बहुत अच्छी है।" कह कर वह सड़क की तरफ चल दिया और जा कर सड़क के बीच में ऐसे लेट गया जैसे मर गया हो।

उसे वहॉ लेटे बहुत देर नहीं हुई थी कि उस किसान की गाड़ी उसके पास आ कर रुक गयी।

किसान बोला — "क्या यह भेड़िया वाकई मरा हुआ है?"

कह कर उसने अपना हंटर उठाया और भेड़िये को उससे एक दो बार ज़ोर से मारा पर भेड़िया ज़रा सा भी नहीं हिला सो वह बोला — "यह तो वाकई मरा हुआ ही लगता है। मैं इसको अपनी गाड़ी में लाद लेता हूँ। घर ले जा कर मैं अपना कोट बनाने के लिये इस की खाल निकाल लूँगा।"

यह सोच कर उसने उस भेड़िये के शरीर को अपनी गाड़ी में पीछे रखे मक्खन के डिब्बों के ऊपर डाल लिया और अपने रास्ते चल दिया।

भेड़िया कुछ देर तक तो बिना हिले डुले पड़ा रहा ताकि कहीं वह गाड़ी वाला पीछे मुड़ कर न देख ले पर फिर वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

भेड़िये को पता चल गया कि वह किसान अपने कोड़े को इस्तेमाल करना जानता था क्योंकि उसके कोड़े की मार तो वह अभी भी अपनी खाल पर महसूस कर रहा था। पर जैसे ही भेड़िये ने मक्खन की खुशबू सूँघी वह अपने सारे दर्द भूल गया।

तुरन्त ही उसने गाड़ी से मक्खन का एक डिब्बा लुढ़का दिया और उसके बाद वह खुद भी गाड़ी से कूद गया। बिजली की चमक की तरह गीदड़ भी घास में से निकल आया। वह आज अपने आपसे बहुत खुश था।

गीदड़ हँसा और उस डिब्बे को घास में लुढ़काता हुआ बोला — "ओ भेड़िये, हम लोगों ने उस किसान को कुछ तो दिखा ही दिया न? वह कभी पता नहीं लगा पायेगा कि उसके मक्खन के डिब्बे को क्या हुआ था।"

भेड़िया बोला — "आओ उसे खोल कर देखते हैं। मुझसे तो और इन्तजार नहीं हो रहा।"

गीदड़ कुछ आश्चर्य में बोला — "क्या? तुम उसको अभी खाना चाहते हो? नहीं नहीं, हम यह अभी नहीं कर सकते। अगर तुम ताजा मक्खन खाओगे तो तुम यकीनन मर जाओगे। सभी इस बात को जानते हैं कि कच्चा मक्खन नहीं खाना चाहिये। हमको उसको पकने का इन्तजार करना चाहिये।"

सो उन्होंने वह डिब्बा पास में उगी हुई ऊँची ऊँची घास में छिपा दिया और घर चले गये।

कुछ दिन बाद भेड़िया अपने घर के अगले दरवाजे पर बैठा धूप खा रहा था पर उसके दिमाग से उस मक्खन के डिब्बे का ध्यान नहीं निकल पा रहा था।

तभी गीदड़ उधर आ निकला तो भेड़िया बोला — "ओह गीदड़ भाई तुमको क्या लगता है कि क्या वह मक्खन पक गया होगा?"

गीदड़ बोला — "सच कहूँ तो अभी तो मेरे दिमाग में मक्खन से भी ज़्यादा जरूरी बातें हैं। मेरी पत्नी को अभी बच्चा हुआ है और मुझे उसका बैप्टिस्म[3] कराने के लिये उसे अभी चर्च ले कर जाना है।

भेड़िया यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने नम्रता से पूछा — "फिर हम उसको किस नाम से पुकारेंगे?"

[3] Baptism – it is a kind of naming ceremony after the birth of a child in Christians in which the child is taken to Church where the priest declares the child a Christian and gives it the Christian name. From that day he or she is Christian, not before.

गीदड़ बोला — "हम उसको "अच्छी शुरूआत"[4] के नाम से पुकारेंगे और वह चलता चला गया।

वह कुछ मुश्किल से चल पा रहा था। उसका आगे को निकला पेट उसे चलने में बहुत परेशानी कर रहा था – जैसा कि सारे पेट उस समय करते हैं जबकि उनमें सारी सुबह मक्खन भरा गया हो।

भेड़िये ने फिर कुछ दिन इन्तजार किया पर जब वह और ज़्यादा इन्तजार नहीं कर सका तो वह फिर गीदड़ की तरफ गया और बोला — "चलो गीदड़ भाई, देख कर आते हैं कि मक्खन का क्या हुआ?"

गीदड़ दुखी आवाज में बोला — "ओह भेड़िये, मेरे पुराने दोस्त। तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे पर अब मुझे अपने दूसरे बच्चे को बैप्टाइज़ कराने के लिये चर्च ले कर जाना है।"

भेड़िया पहले ही उसके पहले बच्चे के नाम पर काफी हॅस चुका था सो उसने ज़रा सादगी से गीदड़ से पूछा — "और अब इस दूसरे बच्चे का नाम क्या होगा गीदड़ भाई?"

गीदड़ बोला — "हॅुह, उसका नाम होगा "पहला छल्ला[5]"।

[4] Good Start – means he had started eating the butter

[5] Translated for the "Ring" which is used to tie wooden planks together to make a barrel. At least 3-4 rings are used for this purpose. Here the "First Ring" means that the jackal had eaten so much butter that it came up to the level of the first ring of the barrel from its brim.

उस दिन गीदड़ ने सुबह इतना सारा मक्खन खाया था कि अब उस मक्खन के डिब्बे में उसके सबसे नीचे वाले छल्ले तक आ गया था।

इसी तरीके से हफ्तों पर हफ्ते गुजरते चले जा रहे थे। भेड़िया हर हफ्ते वही सवाल पूछता और गीदड़ हर हफ्ते उसको वही जवाब देता कि उसको अपने बच्चे को बैप्टाइज़ कराना था।

उसके बच्चों के नाम भी वैसे ही होते – दूसरा छल्ला, तीसरा छल्ला, चौथा छल्ला ...।

आखिर भेड़िया गीदड़ के इस मजाक से तंग आ गया। वह अब और इन्तजार नहीं कर सकता था। वह केवल मक्खन के बारे में ही सोच रहा था। अब तो वह सोना भी नहीं चाहता था क्योंकि अगर वह सोता भी तो सपनों में केवल मक्खन ही देखता।

पर एक दिन गीदड़ ने अचानक कहा — "ठीक है तुम चिन्ता मत करो मेरे पुराने दोस्त। हम लोग कल उधर चलेंगे और मक्खन ले कर ही आयेंगे। मैंने आज ही अपने आखिरी बच्चे को बैप्टाइज़ करवाया है और अब मुझे कोई काम नहीं है।"

भेड़िया थोड़ा सा हॅसते हुए बोला — "उसका नाम क्या तुमने सातवॉ छल्ला रखा है?" गीदड़ के बच्चों के नाम अब उसे कम हॅसाते थे।

गीदड़ तुरन्त बोला — "नहीं नहीं, अबकी बार हमने उसका नाम रखा है "डिब्बे का अन्त"।

अगली सुबह गीदड़ अपने वायदे के अनुसार भेड़िये के घर आ पहुँचा और दोनों उस जगह की तरफ चल दिये जहाँ उन्होंने वह मक्खन का डिब्बा छिपा कर रखा हुआ था।

गीदड़ बोला — "मैं तुमसे ठीक कहता हूँ भेड़िये कि इस समय मक्खन खाने में बहुत ही स्वादिष्ट लगेगा।"

भेड़िया बोला — "अच्छा।" और वह खुशी से जल्दी जल्दी चलने लगा।

गीदड़ फिर बोला — "इस समय वह ठीक से पका हुआ होगा इसलिये वह बहुत ही स्वादिष्ट भी होगा।"

"हाँ हाँ।" कह कर भेड़िया मक्खन के बरतन की तरफ करीब करीब भाग सा लिया।

गीदड़ फिर बोला — "ओह, मैं तो उसे अभी से अपने मुँह में घुलता हुआ महसूस कर रहा हूँ।"

पर भेड़िया उसको इस बात का कोई जवाब नहीं दे सका क्योंकि उसके मुँह में तो पानी बहुत ज़ोर से आ रहा था।

वे दोनों मक्खन के डिब्बे के पास आये और उसको खोला तो देखा कि वह तो खाली पड़ा था।

गीदड़ चिल्लाया — "नहीं।"

भेड़िया भी चिल्लाया — "नहीं।"

गीदड़ बोला — "तो यह तुम थे?"

भेड़िया बोला — "तो यह तुम थे?"

दोनों ने एक दूसरे को गालियाँ देनी शुरू कर दीं।

"मैं तुम्हारे मुँह पर चाँटा मारूँगा।"

"मैं तुम्हारे कान उखाड़ लूँगा।"

भेड़िया गीदड़ को अपनी एक बाँये हाथ की मुट्ठी से मारने ही वाला था कि गीदड़ एक कदम पीछे हटते हुए बोला — "रुको रुको भेड़िये भाई, ज़रा रुको तो।"

भेड़िया गीदड़ से बहुत बड़ा भी था और ताकतवर भी। अगर लड़ाई की नौबत आती तो साफ था कि नुकसान किसको ज़्यादा पहुँचता – गीदड़ को।

सो उसने फिर कहा — "रुको। हम लोग यहाँ खड़े हो कर एक दूसरे को बेकार में ही मार रहे हैं। पहले हम यह तो पता चला लें कि हममें से मुजरिम कौन है।"

भेड़िया तुरन्त बोला — "मुजरिम तुम हो।"

पर गीदड़ शान्ति से बोला — "और मुझे लगता है कि मुजरिम तुम हो। तो क्यों न हम पहले इस बात का फैसला कर लें कि मुजरिम कौन है। यह मक्खन खाया किसने है।

ऐसा करते हैं कि हम लोग वहाँ धूप में जा कर लेट जाते हैं और जिसने भी मक्खन खाया होगा उसके मुँह से वह पिघल कर बाहर बह निकलेगा। तब हम लोग यह यकीनन जान जायेंगे कि हममें से मुजरिम कौन है।"

भेड़िया यह सोचते हुए कि उसके "उस" का मतलब क्या है बोला — "और फिर उसको अच्छी मार पड़ेगी।"

गीदड़ बोला — "बिल्कुल ठीक।"

सो दोनों धूप में लेट गये। जल्दी ही भेड़िया सो गया और खर्राटे भरने लगा। गीदड़ चुपचाप खड़ा हुआ और डिब्बे की तली में लगा आखिरी मक्खन छुड़ा कर उसको भेड़िये के मुँह पर लगा दिया। फिर वह लेट गया और सो गया।

बाद में जब वे जागे तो एक अँगड़ाई ली। गीदड़ सन्तुष्ट हो कर बोला — "भई मेरा मुँह तो साफ है।"

पर भेड़िया परेशानी से बोला — "पर मेरे तो सारे मुँह पर मक्खन लगा है।"

गीदड़ पेड़ से एक लकड़ी तोड़ते हुए बोला — "तब तो यह साफ है कि अब हमें क्या करना है।"

भेड़िया दुखी आवाज में बोला — "मैं यहाँ जरूर सोते में आया होऊँगा और मक्खन खाया होगा। क्योंकि मुझे तो कुछ याद ही नहीं पड़ता कि मैंने मक्खन कब खाया।" कहते हुए वह छिपने की कोई जगह ढूँढने लगा।

पर गीदड़ कुछ नहीं बोला। वह तो अपनी बाँह को भेड़िये को मारने के लिये तैयार कर रहा था।

2 गीदड़ और बन्दर[6]

गीदड़ का यह नियम था कि वह रोज शाम को बोअर के काल[7] जाया करता था। वहॉ जा कर वह उसके खिसकाने वाले दरवाजे से अन्दर घुसता और वहॉ से एक मोटा सा बकरा चुरा कर ले आता था।

गीदड़ ने यह काम कई दिनों तक किया तो तंग आ कर बोअर ने उसको पकड़ने के लिये एक जाल बिछाया। सो जब गीदड़ दोबारा वहॉ गया तो वह उस जाल में पकड़ा गया। उसके शरीर के चारों तरफ फन्दा फॅस चुका था।

वह इधर हिला उधर कूदा ऊपर हुआ नीचे हुआ पर वह जमीन नहीं छू सका। सारी रात बीत गयी अब दिन निकलने ही वाला था सो गीदड़ को बेचैनी होने लगी।

बन्दर एक ऊॅचे से पत्थर पर बैठा था। जब रोशनी हुई तब उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसने सारा मामला साफ साफ देखा।

वह गीदड़ की हॅसी उड़ाने के लिये वहॉ से जल्दी जल्दी नीचे उतर कर आया। वह वहॉ से उतर कर एक दीवार पर आ कर बैठ

---

[6] Jackal and Monkey – a folktale from South Africa, Africa.
Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft21.htm

[7] Kraal is a village of a few huts surrounded by a wall, especially in South Africa. It is very common in Zulu Tribe there. See its picture above.

गया और हॅसते हुए बोला — "हा हा हा। गुड मार्निंग गीदड़ जी। तो तुम यहॉ लटक रहे हो। आखिर तुम पकड़े ही गये न।"

गीदड़ हॅस कर बोला — "क्या? मैं पकड़ा गया? नहीं तो। मैं तो यहॉ आनन्द से झूल रहा हूॅ। यहॉ झूलने में बड़ा मजा आ रहा है।"

"तुम झूठे हो। तुम्हें झूलने में मजा नहीं आ रहा बल्कि तुम तो जाल में फॅस गये हो।"

गीदड़ बोला — "अगर तुम समझ सकते तो तुम जानते कि इस झूले में झूलना और हिलना कितना अच्छा लग रहा है। तुम भी इसमें झूलने से नहीं हिचकिचाते। आओ और आ कर अपने आप देखो कि तुमको इसमें झूल कर सारा दिन कितना तन्दुरुस्त और खुश महसूस होता है। और फिर तुम कभी थकावट महसूस नहीं करोगे।"

बन्दर बोला — "नहीं नहीं मैं नहीं आता। तुम जाल में फॅस चुके हो।"

कुछ देर तक अपनी दलीलें देने के बाद आखिर गीदड़ ने बन्दर को यह विश्वास दिला ही दिया कि उस झूले में झूलना कितना मजेदार था।

सो वह काल की दीवार से कूदा और उसने गीदड़ को उस फन्दे से आजाद कर दिया और उस फन्दे को अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया।

गीदड़ तुरन्त ही वहॉ से कुछ दूर जा कर हॅसने लगा। क्योंकि अब उसकी जगह बन्दर उस झूले में झूल रहा था या यों कहो कि बन्दर अब उसकी जगह फन्दे में फॅस गया था।

गीदड़ हॅस हॅस कर बोला — "आहा अब बन्दर जाल में फॅस गया। आहा अब बन्दर जाल में फॅस गया।"

यह देख कर बन्दर ज़ोर से चिल्लाया — "ओ गीदड़ मुझे इस जाल से आजाद करो।"

गीदड़ ज़ोर से चिल्लाया — "बोअर आ रहा है।"

बन्दर फिर चिल्लाया — "ओ बन्दर मुझे आजाद करो नहीं तो मैं तुम्हारे खिलौने तोड़ दूॅगा।"

गीदड़ बोला — "नहीं वह तुम नहीं कर सकते। वह देखो वह बोअर आ रहा है उसके पास एक बन्दूक भी है। जब तक वह यहॉ आता है तब तक तुम इसी जाल में थोड़ा आराम करो।"

"गीदड़ मुझे जल्दी आजाद करो।"

"नहीं। बोअर तो बस यहॉ आ ही पहुॅचा है। उसने अपनी बन्दूक भी निकाल ली है। ठीक है गुड मार्निंग।" और यह कह कर गीदड़ वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग गया।

जब बोअर पास आया तो उसने बन्दर को जाल में फॅसे पाया तो वह बोला — "आहा तो बन्दर तुम हो जो मेरे बकरे चुराते रहे हो। आज तुम पकड़े गये।"

बन्दर चिल्लाया — "नहीं मैं वह नहीं हूॅ वह तो गीदड़ है।"

बोअर बोला — “नहीं नहीं। मैं तुम्हें जानता हूॅ तुम उससे कोई ज़्यादा अच्छे नहीं हो।”

बन्दर फिर हकला कर बोला — “नहीं बोअर वह मैं नहीं हूॅ वह तो गीदड़ है जिसने तुम्हारे बकरे चुराये हैं।”

बोअर बोला — “ज़रा रुको मैं तुमको बताता हूॅ कि मेरे बकरे चुराने का क्या मतलब है।” कह कर उसने अपनी बन्दूक तानी और ठॉय। बन्दर बेचारा झूले में ही मरा पड़ा था।

3 चीता, बकरा और गीदड़[8]

एक दिन एक चीता अपना शिकार कर के घर वापस लौट रहा था कि वह एक बकरे के घर के सामने से गुजरा। चीते ने बकरे को पहले कभी नहीं देखा था इसलिये वह उसके पास बड़ी नम्रता से गया और बोला — "दोस्त नमस्ते। तुम्हारा नाम क्या है?"

बकरे ने अपनी छाती पर अपना आगे वाला पैर मारा और अपनी फटी सी आवाज में कहा — "मेरा नाम बकरा है। तुम कौन हो?"

चीता जो ज़िन्दे होने की बजाय मरा हुआ ज़्यादा दिखायी दे रहा था बोला — "मैं चीता हूँ।"

और यह कह कर वह वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकता था अपने घर की तरफ भाग लिया।

एक गीदड़ भी वहीं रहता था जहॉ चीता रहता था। घर आ कर चीता गीदड़ के पास गया और बोला — "दोस्त गीदड़, मेरी तो सॉस भी फूल गयी और मैं तो डर के मारे आधा मर भी गया।"

गीदड़ कुछ प्यार से बोला — "क्या हुआ शेर भाई। कुछ बताओ तो।"

[8] The Tiger, the Ram and the Jackal – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft06.htm

आज मैंने एक बहुत ही भयानक जानवर देखा जिसका सिर बहुत बड़ा और मोटा था। जब मैंने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम बकरा बताया।"

यह सुन कर गीदड़ चिल्लाया — "तुम भी क्या बेवकूफ हो शेर भाई। इतना अच्छा मॉस तुम वहीं छोड़ आये। तुमने ऐसा क्यों किया? कोई बात नहीं। कल हम तुम दोनों एक साथ वहॉ जायेंगे और उसे साथ साथ खायेंगे।"

सो अगले दिन शेर और गीदड़ दोनों बकरे के घर चल दिये। जब वे उस पहाड़ी पर पहुँचे जहॉ बकरा रहता था तो बकरा अपने घर के बाहर ही खड़ा था।

वह इधर उधर देख रहा था कि खाने के लिये उसको नरम नरम सलाद कहॉ से मिल सकता था कि उसने शेर और गीदड़ को अपने घर की तरफ आते देख लिया।

वह डर के मारे तुरन्त घर के अन्दर जा कर अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, ऐसा लगता है कि आज हमारी ज़िन्दगी का आखिरी दिन है क्योंकि चीता और गीदड़ दोनों ही हमारी तरफ आ रहे हैं। अब हम क्या करें?"

बकरे की पत्नी ने कहा — "तुम डरो नहीं और चिन्ता भी न करो। तुम ऐसा करो कि इस बच्चे को गोद में उठा लो और उसको ले कर बाहर चले जाओ।

वहॉ उसको बार बार कुछ कुछ देर में नोचते रहना ताकि वह रोता रहे। इससे ऐसा लगेगा कि वह भूख से रो रहा है।"

बकरे ने तुरन्त ही ऐसा ही किया क्योंकि उसके दुश्मन पास आते जा रहे थे।

जैसे ही चीते ने बकरे को देखा तो उसको बकरे से फिर से डर लगने लगा और वह फिर से वापस भाग जाना चाहता था पर गीदड़ ने उसे रोक लिया। बल्कि उसने चीते को भी अपने साथ तेज़ी से आने के लिये कहा।

बकरा अपने बच्चे को नोचते हुए तेज़ आवाज में चिल्लाया — "ओ दोस्त गीदड़, तुमने बहुत अच्छा किया जो तुम चीते को हमारे खाने के लिये अपने साथ ले आये। देखो न यह मेरा बच्चा भूख से कितनी ज़ोर से रो रहा है।"

जैसे ही चीते ने बकरे के ये शब्द सुने वह गीदड़ की बात न मान कर डर के मारे अपने साथ गीदड़ को भी ले कर वहॉ से भाग लिया और पहाड़ियों और घाटियों से हो कर अधमरे गीदड़ को घसीटते हुए ला कर अपने घर आ कर ही दम लिया।

इस तरह बकरे ने अपने आपको चीते से गीदड़ से बचाया।

4 एक शेर, एक गीदड़ और एक आदमी[9]

एक बार ऐसा हुआ कि एक शेर और एक गीदड़ कुछ जमीन और राज्य के मामले पर सोच विचार के लिये इकट्ठा हुए। गीदड़ जंगल के राजा शेर का इन मामलों पर एक बहुत ही खास सलाहकार था।

काफी देर तक इस बारे में बात करने बाद उनकी बातचीत उनके अपने बारे में बात की तरफ मुड़ गयी।

शेर ने अपनी ताकत की बड़ाई करनी शुरू कर दी। गीदड़ एक बहुत बड़ा दूसरे की बड़ाई करने वाला था सो वह भी उसकी हॉ में हॉ मिलाता रहा।

गीदड़ की बात सुन कर शेर भी अब अपने को सचमुच में बहुत ताकतवर समझ रहा था तो गीदड़ ने कहा — "शेर जी, अब मैं आपको एक ऐसा जानवर दिखाऊॅगा जो आपसे भी ताकतवर है।"

थोड़ी दूर तक वे लोग साथ साथ चलते रहे, गीदड़ आगे आगे और शेर उसके पीछे पीछे। कुछ देर में ही उनको एक छोटा लड़का मिला।

शेर ने पूछा — "क्या यह है वह ताकतवर आदमी?"

"नहीं राजा जी। इसको तो अभी आदमी बनना है। यह तो अभी केवल बच्चा है।" गीदड़ ने जवाब दिया।

---

[9] The Lion, the Jackal and the Man – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft09.htm

कुछ दूर जाने पर उनको एक बूढ़ा आदमी मिला जिसकी कमर झुकी हुई थी और वह एक डंडे के सहारे चल रहा था।

शेर ने पूछा — "क्या यही है वह ताकतवर आदमी?"

गीदड़ बोला — "नहीं राजा जी, यह भी वह नहीं है। यह पहले आदमी रह चुका है।"

"तो फिर कहॉ है वह ताकतवर आदमी?"

"आप चलते रहिये मैं उसे जल्दी ही दिखाता हूॅ आपको।"

वह फिर आगे चलने लगे। कुछ दूर आगे जा कर उनको एक जवान शिकारी मिला। उसके साथ उसके कुछ शिकारी कुत्ते भी थे।

गीदड़ बोला — "यह है वह आदमी राजा जी। इसकी ताकत के सामने आपकी ताकत कुछ भी नहीं। अगर आप इस आदमी से जीत गये तभी यह समझा जायेगा कि आप सचमुच में ताकतवर हैं।"

यह कह कर गीदड़ एक तरफ को हट गया और एक पेड़ के पीछे छिप गया ताकि वह शेर और उस आदमी की मुलाकात को साफ साफ देख सके।

शेर दहाड़ते हुए उस शिकारी की तरफ बढ़ा पर जब वह उस के पास तक आया तो उस शिकारी के कुत्तों ने उसको पीछे हटा दिया।

शेर ने भी कुत्तों की तरफ ध्यान न देते हुए और अपने अगले पंजों को झटकते हुए उन कुत्तों को अलग अलग कर दिया। वे कुत्ते भी भौंकते हुए अपने मालिक की तरफ चले गये।

उसके बाद आदमी ने अपनी बन्दूक से एक गोली चलायी जो शेर के कन्धे को छूती हुई निकल गयी पर उसको भी शेर ने अनदेखा कर दिया।

इस पर शिकारी ने अपना लोहे का चाकू निकाल लिया और शेर को उससे कई बार मारा। चाकू की मार खा कर शेर पीछे हट गया और भाग गया पर तुरन्त ही शिकारी ने उसको एक गोली और मारी।

शेर गीदड़ के पास आया तो गीदड़ ने पूछा — "क्या तुम अभी भी अपने आपको सबसे ज़्यादा ताकतवर समझते हो?"

शेर बोला — "नहीं गीदड़ भाई। उस आदमी को वहीं रहने दो। मैंने उसके जैसा ताकतवर और कोई नहीं देखा। पहले तो उसके दस रक्षा करने वालों ने मेरे ऊपर हमला कर दिया।

मैंने उनकी तो कोई खास चिन्ता नहीं की पर जब मैं उसके टुकड़े टुकड़े करने के लिये आगे बढ़ा तो उसने मेरे ऊपर गोलियॉ बरसायीं, और वे भी मेरे चेहरे के ऊपर। उन्होंने मेरे चेहरे को जला दिया पर मैंने उनकी भी ज़्यादा चिन्ता नहीं की।

पर जब मैंने दोबारा उसको गिराने की कोशिश की तो उसने अपने शरीर की पसलियों में से एक हड्डी निकाली और उससे मुझे

मारा। उसने मुझे बहुत ही बुरे घाव दिये। इतने बुरे कि मेरे लिये वहॉ से भाग निकलने के अलावा और कोई चारा न रहा।

जब मैं वहॉ से भाग रहा था तो विदाई के समय की भेंट के रूप में उसने कुछ और गोलियॉ मुझे मारीं। नहीं गीदड़ भाई नहीं, मैं मान गया उसको। वह सचमुच में मुझसे ज़्यादा ताकतवर है।"

5 चीता और गीदड़[10]

इसलिये नहीं कि वह अपने पड़ोस में सबमें बहुत ही लायक था या फिर बहुत तरक्की पसन्द था।

पर इसलिये भी कि वह हमेशा ऐसी सलाह दिया करता था जो सबको बहुत अच्छी लगती थी और सबका उससे बहुत फायदा होता था इसलिये वह गीदड़ अपने पड़ोस में एक तरक्की पसन्द आदमी के नाम से मशहूर हो गया था।

उसके आस पास जो बहुत ही अच्छे घराने के लोग थे और उसको किसी तरह से दुखी नहीं करना चाहते थे वे ऐसे नाम उसके नाम के साथ जोड़ना चाहते थे जैसे "होशियार गीदड़" या "सबसे अक्लमन्द चूहा पकड़ने वाला" आदि आदि।

उसको यह नाम इसलिये भी मिला था क्योंकि वह अंग्रेजी भी बोलता था और खास तौर पर जब जबकि उसको यह पता होता था कि उसके आस पास के लोग अंग्रेजी समझ नहीं पायेंगे।

और इसलिये भी क्योंकि जनता में वह एक जज का काम भी कर सकता था।

---

[10] The Lion and Jackal – Translated from from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft11.htm
[My Note : Although the title of this story says "The Lion" but in the whole story the author has used the word "Tiger" for the Lion so I have used the word "Cheetaa" throughout the story.]

उसकी जबान बहुत ही मीठी थी और वह सबका प्रिय बोल सकता था खास कर जो लोग बहुत पिछड़े हुए थे उनके ऊपर तो वह बहुत ही अच्छा असर डाल सकता था।

अन्दर से वह आस पास के लोगों में एक बहुत ही बुरा आदमी था पर उसको अपनी पैदायशी बुराइयों को बहुत अच्छी तरह से छिपाना भी आता था और अपने इसी गुण की वजह से वह बहुत दिनों तक एक लायक आदमी बना रहा।

एक बार उसकी पूँछ एक लोहे के जाल में फॅस कर टूट गयी। असल में हुआ क्या कि वह बहुत दिनों से बोअर बतख[11] के घर तक पहुँचने की कई तरकीबें लड़ाता रहा और एक तरकीब से वह उसके घर तक जा भी पहुँचा।

पर जब उसे होश आया तो वह उस बतख के घर पर तो बैठा हुआ था पर उसकी पूँछ लोहे के जाल में फॅसी हुई थी और कई कुत्ते उसकी तरफ बढ़े चले आ रहे थे।

जब उसको पता चला कि इसका क्या मतलब था तो उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर अपनी पूँछ खींची जिसकी उसकी निगाह में बहुत कीमत थी।

और इस बात ने उसकी सारे पड़ोस में हॅसी उड़वा दी होती अगर उसने कोई तरकीब न निकाल ली होती तो। वह तरकीब क्या थी?

[11] Boar Duck

उसने सारे गीदड़ों की एक मीटिंग बुलवायी और उनको यह विश्वास दिला दिया कि शेर ने एक फरमान भिजवाया है कि आज से सारे गीदड़ पूँछ के बिना ही रहेंगे क्योंकि उनकी सुन्दर पूँछ कुछ बदकिस्मत जानवरों की आखों में खटकती है।

अपनी मीठी बोली में उसने उनको यह भी समझा दिया कि राजा का उनके बीच में दखल देने का उसको बहुत दुख था पर वह क्या करता जैसा हुक्म राजा का था वैसा था।

जितनी जल्दी उस हुक्म को माना जाता उतना ही अच्छा था। इसी लिये उसने भी अपनी पूँछ कटवा ली थी। सो बहुत दिनों तक सारे गीदड़ बिना पूँछ के ही रहे। हॉ वह बात दूसरी है कि फिर बाद में उनके नयी पूँछ उग आयी।

यह उन्हीं दिनों की बात है कि चीते ने उस गीदड़ को एक स्कूल मास्टर की हैसियत से अपने यहॉ बुलाया। उन दिनों आस पास के देशों में चीता ही सबसे ज़्यादा अमीर था।

और क्योंकि उसको बिना पढ़ लिखा होने की वजह से बहुत नुकसान सहना पड़ा था इसलिये वह चाहता था कि उसके बच्चे सबसे अच्छा पढ़ें लिखें।

इस बारे में उसने अपने घर में राय की और उसमें यह विचार किया गया कि पढ़ाई लिखाई किसी भी आदमी के लिये कितनी जरूरी है और यही सोच कर उसने फिर गीदड़ को बुलाया और उसको अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये कहा।

गीदड़ तो इसके लिये पहले से ही तैयार था। उसने चीते से कहा कि हालॉकि यह उसका काम नहीं था पर अपना समय बिताने के लिये और अपने पड़ोसी दोस्त की सहायता करने के लिये वह यह करने को तैयार था।

असल में उसके और चीते के खेत बराबर बराबर थे तो वे दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह जानते भी थे।

इस बात से चीते को कोई मतलब नहीं था कि गीदड़ ने पढ़ाने को अपना धन्धा भी नहीं बना रखा था और न ही उसके पास कोई डिग्री थी।

चीता हॅस कर बोला — "गीदड़ भाई, अब तुम मेरे अच्छेपन की इतनी ज़्यादा तारीफ भी न करो। हम सब तुमको बहुत अच्छी तरह जानते हैं।

बजाय किसी और स्कूल मास्टर के मैं अपने बच्चों को तुम्हें सौंपना ज़्यादा पसन्द करूॅगा क्योंकि यह मेरी और मेरे बच्चों की मॉ की खास इच्छा है कि हमारे बच्चों को तरक्की पसन्द पढ़ाई लिखाई मिले।

हम लोग यह चाहते हैं कि वे उतने ही लायक आदमी और औरत बनें जैसे तुम हो और उसी तरह से दुनियॉ में अपनी जगह बना सकें जिस तरीके से तुमने बना रखी है।"

यह सुन कर गीदड़ बोला — "पर एक शर्त है चीते भाई। यह मेरे लिये बहुत मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन होगा कि मैं तुम्हारे

खेत पर आ कर अपना स्कूल लगाऊँ क्योंकि इससे मेरा खेत बर्बाद होने का डर है और यह मैं देख नहीं सकता।"

चीता बोला — "तुमको इन दोनों में से किसी भी काम को करने की जरूरत नहीं है। तुम जहाँ चाहो बच्चों को तुम वहीं पढ़ा सकते हो। तुम्हारी मर्जी।"

गीदड़ बोला — "तो फिर मैं बच्चों को अपने घर पर ही पढ़ाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हुए भी चीते ने यही सोचा कि पढ़ाई दूसरे किसी अजनबी के घर पर ही ठीक रहेगी सो वह इस बात पर राजी हो गया।

फिर गीदड़ ने उसे यह सब भी बताया कि भेड़िये ने उसे कैसे पाला था। उसके पिता ने उसको भेड़िये के पास पढ़ने के लिये जब भेजा था तो वह कितना छोटा था। उसके बाद तो वह फिर कई स्कूलों में गया।

भेड़िया तो उसका केवल पहला मास्टर था। पर बाद में उसको पता चला कि भेड़िये ने उसको कितनी अच्छी तरह पढ़ाया था और एक मास्टर की तरह से वह उसके लिये कितना अच्छा साबित हुआ।

उसने फिर कहा — "बच्चों को तभी ढाल लेना चाहिये जब वे छोटे हों। उनको ढालने का इससे अच्छा और कोई समय नहीं होता

जब वे प्लास्टिक जैसे मुलायम होते हैं। तुम्हारे बच्चे भी इस समय उसी उमर के हैं।

मैं अभी बस यही सोच रहा था कि तुम यह बहुत अच्छा कर रहे हो जो तुम कुछ समय के लिये उनको अपने से दूर भेज रहे हो।"

खुशकिस्मती से गीदड़ के घर में उस समय एक कमरा खाली था जिसमें वह उन बच्चों को पढ़ा सकता था। और उसकी पत्नी उनके रहने का भी इन्तजाम कर सकती थी हालॉकि उनको अपने रहने की जगह को थोड़ा सा बढ़ाना पड़ता।

इस बात पर गीदड़ और चीता दोनों राजी हो गये कि चीते के बच्चे गीदड़ के घर में रह कर ही पढ़ेंगे। चीते की पत्नी ने कुछ और बातों पर आपस में राय की क्योंकि बच्चे पहली बार अपने माता पिता से अलग हो रहे थे और वे अगले ही दिन वहॉ से जाने वाले थे।

गीदड़ बोला — "हॉ मुझे एक बात का और ध्यान आया। मेरे अपने छोटे बच्चों के अलावा ये सात बच्चे — इन सबकी देखभाल में काफी पैसे लग जायेंगे सो तुम हर हफ्ते एक मोटा सा भेड़ भेज दिया करना।

और इन लोगों की पढ़ाई में कोई दखल न पड़े इसलिये कुछ समय के लिये इन बच्चों को अपनी छुट्टी भी मेरे घर में ही बितानी पड़ेगी। ये बच्चे तुम्हारे पास नहीं आ सकेंगे।

जब मैं देखूँगा कि ये लोग यहॉ रहने के आदी हो गये हैं तो मैं तुम्हें बता दूँगा। तब तुम आ कर इनको अपने घर ले जाना पर उससे पहले नहीं।

कुछ समय के लिये तुम इनको न ही देखो तो अच्छा होगा पर हॉ अगर तुम्हारी पत्नी आ कर उनसे मिलना चाहे तो हर शनिवार को वह उनको देखने के लिये आ सकती है। बाकी सब मैं देख लूँगा।"

अगले दिन चीते के बच्चे बेचारे बहुत रोये चिल्लाये क्योंकि वे अपने मॉ बाप को छोड़ कर कहीं जाना नहीं चाहते थे। वे अपने घर से पहली बार दूर जा रहे थे न।

पर चीते और उसकी पत्नी ने अपने बच्चों को समझाया कि यह सब वे उनकी भलाई के लिये ही कर रहे थे। और आगे चल कर उनको पता चलेगा कि यह सब उनके लिये कितना फायदेमन्द था।

अगले दिन आखिर वे बच्चे रोते हुए गीदड़ के साथ गीदड़ के घर चले गये। पहला शनिवार आया तो सुबह ही चीते की पत्नी अपने बच्चों से मिलने के लिये चली। वह अपने बच्चों से मिलने के लिये बहुत बेचैन थी।

जब वह गीदड़ के घर से काफी दूरी पर ही थी कि तभी गीदड़ ने उसको आते हुए देख लिया। सो अपने पड़ोसियों के रीति रिवाजों के अनुसार वह उसको लेने के लिये थोड़ा आगे तक गया।

दोनों ने एक दूसरे को नमस्ते की और एक दूसरे का हालचाल पूछा। हालचाल पूछने के बाद चीते की पत्नी का पहला सवाल था — "गीदड़ भाई, बच्चों के साथ कैसा चल रहा है? क्या वे सब ठीक हैं और खुश हैं? वे कहीं तुमको बहुत ज़्यादा परेशान तो नहीं करते?"

गीदड़ ने उत्साह से कहा — "नहीं मिसेज़ चीता, बिल्कुल नहीं। पर हमको ज़ोर से बातें नहीं करनी चाहिये क्योंकि उन्होंने अगर तुम्हारी आवाज सुन ली तो वे रो पड़ेंगे। और फिर तुम्हारे साथ वे शायद वापस भी जाना चाहें। इससे बेकार में ही उनकी पढ़ाई में बाधा पढ़ेगी और परेशानी खड़ी हो सकती है।"

यह सुन कर चीते की पत्नी थोड़ी सी परेशान हुई और बोली — "पर गीदड़ भाई मैं उनको देखना चाहती हूॅ।"

गीदड़ बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम तो उनको देख लो पर यह ठीक नहीं होगा कि वे तुमको देखें। मैं उनको एक एक कर के खिड़की पर ले कर आता हूॅ सो तुम उनको यहॉ से देख लेना कि वे ठीक हैं कि नहीं।"

फिर गीदड़ और उसकी पत्नी और मिसेज चीते ने कौफी पी और कुछ देर बातें की। उसके बाद गीदड़ मिसेज चीते को दरवाजे के पास ले गया और वहॉ से उसको अपने घर के पीछे के ऑगन में देखने के लिये कहा।

वहॉ से उसने चीते के बच्चों को खिड़की पर ला कर एक एक कर के दिखाया जबकि वहॉ से उसके बच्चे अपनी मॉ को नहीं देख सकते थे।

सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि गीदड़ ने कहा था पर छठा छोटा चीता दो बार उठाया गया क्योंकि चीते के पहले बच्चे का तो पिछले रविवार को ही अचार बना लिया गया था।

ऐसा आने वाले हर शनिवार को होता रहा जब तक कि सबसे छोटे चीते को सात बार नहीं उठा लिया गया।

और अगले शनिवार को जब मिसेज चीता अपने बच्चों को देखने के लिये गीदड़ के घर आयी तो चारों तरफ मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ था और गीदड़ का सारा मकान खाली पड़ा था।

वह सीधी सामने के दरवाजे पर गयी तो वहॉ उसको घास पर पड़ा हुआ एक कागज मिला जिस पर लिखा हुआ था "हम लोग बच्चों के साथ एक पिकनिक पर गये हुए हैं वहॉ से हम लोग गीदड़ों के सालाना नाच पर जायेंगे। यह उन बच्चों की तरक्की पसन्द पढ़ाई के लिये बहुत जरूरी है।"

बेचारी मिसेज़ चीता वह नोट पढ़ कर वापस चली गयी। शनिवार पर शनिवार गुजरते गये, मिसेज़ चीता हर शनिवार अपने बच्चों को देखने आती रही पर हर बार उसको गीदड़ का घर कुछ ज़रा ज़्यादा ही उजाड़ दिखायी देता रहा।

एक बार तो उसको उसमें मकड़ी के जाले भी दिखायी देने लगे। अगली बार उसको सॉप के रेंगने के निशान मिले तो उसको लगा कि अब तो वह मकान गीदड़ की बजाय सॉप का हो गया है सो वह बेचारी रोती हुई अपने घर चली गयी।

6 गीदड़ और भेड़िया[12]

एक बार की बात है कि एक गीदड़ किसी बस्ती के पास ही रहता था। एक बार उसने समुद्र के किनारे की तरफ से एक मोटर गाड़ी आती देखी। उस गाड़ी में मछलियॉ भरी हुई थीं।

उसने उस गाड़ी मे पीछे से चढ़ना चाहा पर वह उसमें चढ़ नहीं सका सो वह सड़क पर आगे की तरफ ऐसे लेट गया जैसे कि मर गया हो।

जब गाड़ी उस गीदड़ के पास तक पहुॅची तो गाड़ी के ड्राइवर के साथी ने ड्राइवर से कहा — "अरे यह देखो तुम्हारी पत्नी के लिये यह कितना अच्छा जानवर है।"

ड्राइवर ने कहा — "तो चलो इसको भी गाड़ी में डाल दो।"

सो उसने गीदड़ को उठा कर गाड़ी में डाल दिया और गाड़ी उस चॉदनी रात में फिर आगे बढ़ गयी।

सारे रास्ते गीदड़ गाड़ी में से मछलियॉ बाहर सड़क पर फेंकता रहा। फिर वह खुद भी उस गाड़ी से बाहर कूद गया। उसको तो आज बहुत सारा मॉस इनाम में मिल गया था।

पर एक बेवकूफ भेड़िया उधर आया और अपने हिस्से से ज़्यादा मॉस खा गया। इससे गीदड़ को भेड़िये से बहुत शिकायत हो

[12] The Jackal and the Wolf – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft07.htm

गयी। वह उससे बोला — "तुमको भी बहुत सारी मछली मिल सकती है अगर तुम भी मेरी तरह से गाड़ी के आगे मरे हुए की तरह से लेट जाओ तो – बिल्कुल शान्त, चाहे तुम्हारे आस पास कुछ भी होता रहे।

भेड़िया बोला — "हूँ।"

सो जब अगली गाड़ी समुद्री किनारे की तरफ से आयी तो वह भी सड़क पर जैसे उसको गीदड़ ने बताया था लेट गया।

ड्राइवर के साथी ने जब एक मरे हुए भेड़िये को सड़क पर पड़ा देखा तो बोला कि — "अरे सड़क पर यह भद्दी सी क्या चीज़ पड़ी है?"

कह कर वह उठा और उसने डंडी से उसको पीटना शुरू कर दिया। मारते मारते उसने भेड़िये को अधमरा कर दिया।

भेड़िया भी गीदड़ के कहे अनुसार जब तक उससे हो सका तब तक तो चुपचाप पड़ा रहा मगर फिर जब उससे नहीं रहा गया तो वह उठ कर वहॉ से भाग गया और गीदड़ से जा कर अपना सारा हाल कहा।

गीदड़ ने उसे शान्त करने का बहाना किया और बोला — "उफ़ कितनी बदकिस्मती है मेरी कि मुझे कभी ऐसी सुन्दर खाल नहीं मिली जैसी तुम्हारे पास है।"

7 आदमी और सॉप[13]

बहुत पहले की बात है कि एक बार एक आदमी सड़क पर जा रहा था कि जाते जाते उसको एक सॉप दिखायी दिया जो एक बड़े से पत्थर के नीचे फॅसा पड़ा था जो उसके ऊपर गिर पड़ा था।

सॉप ने आदमी से प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। यह बड़ा पत्थर मेरे ऊपर गिर पड़ा है। इसकी वजह से मैं हिल भी नहीं सकता।

सूरज भी बहुत गर्म है और उसकी गर्मी मुझे मारे डाल रही है। अगर तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं मर जाऊॅगा।"

आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारे ऊपर से यह पत्थर हटाऊॅगा तो तुम मुझे काट लोगे तब तुम्हारी बजाय मैं मर जाऊॅगा।"

सॉप ने पूछा — "मैं उस आदमी को नुकसान क्यों पहुॅचाऊॅगा जो मेरी सहायता करेगा। इसके अलावा मैं इतना कमजोर हूॅ कि मुझमें केवल इतनी ही ताकत है कि इस घटना से ठीक होने के लिये मैं अपने घर तक रेंगता हुआ चला जाऊॅ।"

वह आदमी बेचारा बहुत ही भला और दयालु आदमी था वह किसी को दुखी नहीं देख सकता था चाहे वह सॉप ही क्यों न हो।

---

[13] The Man and the Snake – a folktale from South Africa, Africa. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=114
Retold and written by Mike Lockett.
[My Note: This story seems to be the same with a slight difference made in retelling as the story No 13 given in this book "The White Man and the Snake"]

सो उसने साँप के ऊपर से वह बड़ा पत्थर हटा दिया। पर जैसे ही उस आदमी ने वह पत्थर हटाया साँप ने अपना सिर ऊपर उठाया और अपना मुँह खोल कर बोला — "अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ।"

आदमी बोला — "यह तो ठीक नहीं है। तुमने तो मुझे न काटने का वायदा किया था अगर मैंने तुम्हारी सहायता की तो।"

साँप बोला — "जब तुमने मुझे देखा था तो तुम जानते थे मैं एक साँप था। तुम यह भी जानते थे कि साँप काटते हैं। तुमने यह कहा भी था कि अगर तुमने मुझे आजाद कर दिया तो मैं तुमको काट लूँगा। तुम बिल्कुल ठीक थे। अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ बस।"

आदमी बोला — "ठहरो ठहरो, यह सब ठीक नहीं है।"

साँप बोला — "तो फिर यह कौन बतायेगा कि ठीक क्या है?"

आदमी बोला — "कम से कम हम किसी और जानवर से यह पूछ सकते हैं कि तुम्हारा मुझे काटना ठीक है या नहीं।"

साँप बोला — "ठीक है तुम पूछना चाहते हो तो पूछ सकते हो पर मैं जानता हूँ कि दूसरे लोग भी मुझ ही से राजी होंगे।"

सो पहले वे लोग हयीना[14] के पास गये। आदमी ने हयीना ने पूछा — "क्या साँप के लिये यह ठीक है

[14] Hyena – a tiger-like animal. See his picture above.

कि वह मुझे काटे जबकि मैंने एक बड़ा पत्थर उसके ऊपर से हटा कर उसकी जान बचायी है?"

हयीना ने सोचा कि जब आदमी ने मेरे साथ कभी भी ठीक से बर्ताव नहीं किया तो सॉप भी उसके साथ ठीक से बर्ताव क्यों करे?

इसके अलावा उसने सोचा कि जब सॉप उस आदमी को काट लेगा और वह मर जायेगा तो उसको भी आदमी खाने के लिये मिल जायेगा। सो उसने आदमी से कहा कि सॉप ठीक कह रहा था।

सॉप ने उस आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया कि आदमी फिर बोला — "थोड़ा और इन्तजार करो मैं एक और जानवर से पूछ लूँ।"

सो वे आगे चले तो उनको एक खरगोश मिला। सॉप ने खरगोश की तरफ देख कर घूरा और बोला — "क्या मेरे लिये यह ठीक है कि मैं आदमी को उसके मेरे ऊपर से पत्थर हटाने के बाद काटूँ?"

खरगोश जानता था कि अगर वह सॉप की तरफ से नहीं बोला तो सॉप उसको काट लेगा इसलिये वह बोला — "आदमी ने मेरी कभी कोई सहायता नहीं की तो मैं उसकी सहायता क्यों करूँ□सो यह ठीक है कि तुम आदमी को काट लो।"

सो सॉप ने एक बार फिर आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया। आदमी ने नाउम्मीदी से कहा — "ठीक है इससे पहले

कि तुम मुझे काटो हम एक जानवर को और देख लें। मेरे ऊपर मेहरबानी करो।"

सॉप राजी हो गया। उसी समय एक गीदड़ उधर से गुजरा। आदमी ने उस गीदड़ से पूछा — "क्या सॉप के लिये यह ठीक है कि उसके ऊपर से पत्थर हटा कर उसकी जान बचाने के बदले में वह मुझे काटे?"

गीदड़ बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि सॉप किसी ऐसे पत्थर के नीचे आ सकता है जिसको वह हटा कर न निकल सकता हो। जब तक मैं अपनी ऑखों से न देख लूँ मैं इस बात पर विश्वास कर ही नहीं सकता। तुम मुझे वह जगह दिखाओ जहॉ यह घटना हुई थी।"

सो सब लोग वहॉ गये जहॉ सॉप पत्थर के नीचे बैठा था। वहॉ पहुँच कर गीदड़ ने सॉप से कहा — "सॉप, अब तुम लेट जाओ और मुझे देखने दो कि वह पत्थर तुम्हारे ऊपर कैसे रखा था।"

सॉप एक जगह लेट गया और आदमी ने उसके ऊपर वह पत्थर रख दिया जो उसने पहले हटाया था। गीदड़ ने पूछा — "क्या आदमी ने तुमको इसी हालत में पाया था?"

आदमी और सॉप दोनों एक साथ बोले — "हॉ।"

आदमी फिर वह पत्थर हटाने के लिये आगे बढ़ा तो गीदड़ बोला — "तुम बिल्कुल ही बेवकूफ हो क्या? सॉप के ऊपर से पत्थर नहीं हटाओ। वह तुमको काटना चाहता था और तुम उसको बचाना

चाहते हो? अगर तुम यह पत्थर हटा दोगे तो वह तुमको फिर से काट लेगा। चलो यहॉ से चलें। यह यहीं ठीक है।"

आदमी और गीदड़ सॉप को वहीं पत्थर के नीचे छोड़ कर चले गये। इस तरह गीदड़ ने आदमी की जान बचायी।

8 शेर और गीदड़[15]

एक बार एक शेर और एक गीदड़ ने आपस में यह तय किया कि वे एक साथ शिकार करने जायेंगे और फिर आपस में उसको बॉट लेंगे। इस तरह वे अपने अपने परिवार के लिये जाड़े का मौसम के लिये कुछ खाना इकट्ठा कर लेंगे।

अब शेर तो गीदड़ से कहीं ज़्यादा अच्छा शिकारी था सो गीदड़ ने उसको सलाह दी कि शेर शिकार करेगा और वह खुद शेर के शिकार किये हुए मॉस को उनके घर तक ले जाने में सहायता करेगा। और मिसेज़ गीदड़ और उनके बच्चे उस मॉस को तैयार करने और सुखाने में उसकी सहायता करेंगे।

साथ में वे यह भी ख्याल रखेंगे कि मिसेज़ शेर और उनके परिवार को मॉस की कमी न पड़े।

शेर इस बात पर राजी हो गया और दोनों शिकार के लिये चल दिये। वे लोग काफी समय तक शिकार करते रहे और उन दोनों ने बहुत शिकार किया।

शिकार के बाद शेर अपने परिवार को देखने और अपने शिकार किये गये मॉस को खाने के लिये लौटा जैसी कि वह आशा कर रहा था कि उसके घर में तो बहुत सारा मॉस होगा।

---

[15] The Lion and Jackal – a folktale from South Africa, Africa. Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_4.html

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि मिसेज़ शेर और उसके बच्चे तो भूख से मरने वाले थे और बहुत ही खराब हालत में थे।

ऐसा लगता था कि गीदड़ ने उनको शिकार के केवल कुछ ही टुकड़े दिये थे। और वे भी इतने कम कि बस वे केवल ज़िन्दा ही रह सकें। वह हमेशा ही उनसे यही कहता रहा कि उसे और शेर को जंगल में कोई बहुत ज़्यादा शिकार नहीं मिला।

जबकि उसके अपने परिवार में मॉस बहुत सारा था और उसके परिवार को सब लोग खूब तन्दुरुस्त थे।

यह सब शेर से सहन नहीं हुआ। वह गुस्से में भर कर गीदड़ और उसके पूरे परिवार को वहीं मारने चला जहॉ भी कहीं वे उसको मिल जाते।

गीदड़ यह बात पहले से ही जानता था सो वह इसका सामना करने को तैयार था। उसने अपनी सारी चीज़ें पहले ही एक पहाड़ की चोटी पर रख दी थीं। और वे सब एक ऐसी जगह रखी थीं जहॉ तक पहुचने का रास्ता बहुत कठिन था और केवल वही वहॉ तक पहॅुच सकता था।

शेर ने जब उसे उस पहाड़ की चोटी पर देखा तो गीदड़ ने भी उसको यह कह कर नमस्ते की — "गुड मौर्निंग चाचा शेर।"

यह सुन कर शेर गुस्से में भर कर अपनी बिजली की सी कड़कती आवाज में बोला — "ओ गधे के बच्चे जैसा तूने मेरे

परिवार के साथ किया है उस हैसियत से तेरी मुझे चाचा कहने की हिम्मत कैसे हुई?"

गीदड़ बोला — "ओह चाचा अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊॅ? मेरी पत्नी तो बस एक बहुत ही जंगली जानवर है।"

तभी शेर ने "पटाक पटाक" की आवाज सुनी। गीदड़ सूखी खाल को एक डंडे से मार कर शेर को यह दिखाना चाह रहा था कि वह अपनी जंगली पत्नी को पीट रहा था।

और साथ में आ रही थीं मिसेज़ गीदड़ की आवाज़ें जैसे कोई उसको पीट रहा हो और उनके बच्चों के चिल्लाने की आवाज़ें जिनको उनकी मॉ को न मारने के लिये और उसके ऊपर न चिल्लाने के लिये कहा गया था।

"वह बहुत बदमाश है। यह सब उसी का करा धरा है। मैं उसे आज और अभी मार दूॅगा।" और उसने फिर से उस सूखी हुई खाल को मारना शुरू कर दिया।

मिसेज़ गीदड़ और उसके बच्चों की दर्द भरी चिल्लाहट सुन कर शेर का दिल पसीज गया। उसने गीदड़ से कहा कि वह अब मिसेज़ गीदड़ को मारना बन्द करे। तब कहीं जा कर गीदड़ ने अपनी पत्नी को मारना बन्द किया।

जब गीदड़ का दिमाग कुछ ठंडा हो गया तो उसने शेर को ऊपर बुलाया और कहा कि वह उसके घर कुछ खा कर जाये।

शेर ने उस पहाड़ी पर चढ़ने की बहुत कोशिश की पर वह उस पर चढ़ नहीं सका। गीदड़ जो हमेशा ही सबकी सहायता करने को तैयार रहता था बोला — "मैं ऐसा करता हूॅ कि तुम्हारे लिये नीचे एक रस्सी फेंकता हूॅ तुम उसको पकड़ कर ऊपर आ सकते हो।"

शेर राजी हो गया तो गीदड़ ने उसके लिये एक रस्सी फेंकी। जब उसने और उसके परिवार ने शेर को आधे रास्ते तक ऊपर खींच लिया तो चतुराई से उसने उसकी वह रस्सी काट दी। शेर धम्म से नीचे गिर पड़ा और उसको बहुत चोट आयी।

इस पर गीदड़ ने फिर से अपनी पत्नी को वैसे ही मारना शुरू किया जैसे वह पहले मार रहा था कि उसने शेर को खींचने के लिये उसको सड़ी हुई रस्सी क्यों दी और उसके परिवार वालों ने भी फिर से वैसे ही चिल्लाना शुरू किया जैसे वे पहले चिल्ला रहे थे।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि अबकी बार वह उसको भैंस की खाल की मजबूत वाली रस्सी दे जो किसी भी बोझ को आसानी से खींच सकती थी। सो अबकी बार यह नयी रस्सी फेंकी गयी जिससे शेर ने अपने आपको बॉध लिया।

सबने मिल कर ऊपर से फिर से वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी। जब शेर इतनी ऊपर पहुॅच गया कि वह पहाड़ी के ऊपर यह झॉक कर देख सकता कि मॉस कहॉ पक रहा था और बाकी मॉस कहॉ सूख रहा था वह रस्सी फिर से काट दी गयी।

अबकी बार शेर इतनी ज़ोर से नीचे गिरा कि काफी देर तक तो उसको होश ही नहीं आया। जब शेर को थोड़ा होश आया तो गीदड़ उससे उसके ऊपर दया दिखाते हुए बोला कि इससे कोई फायदा नहीं है कि उसको रस्सी से ऊपर खींचा जाये।

अब यही ज़्यादा ठीक रहेगा कि यहीं से मॉस का एक बहुत बढ़िया सा भुना हुआ टुकड़ा शेर के गले में डाल दिया जाये।

अब शेर तो भूख से पागल सा हो रहा था और दो बार गिरने से घायल हो रहा था सो वह इस बात पर भी राजी हो गया। अब वह उस मॉस के बढ़िया भुने हुए टुकड़े के कौर का इन्तजार करने लगा जो गीदड़ उसके मुॅह में फेंकेगा।

इस बीच गीदड़ ने एक गोल पत्थर खूब गरम किया और उसको मॉस के एक पतले से टुकड़े में लपेटा और शेर के गले की तरफ फेंक दिया। शेर ने भी अपना गला पूरा खोल रखा था।

सो जैसे ही गीदड़ का फेंका गरम पत्थर शेर के गले में पड़ा वह गरम पत्थर सीधा शेर के गले में चला गया उसका गला पूरा का पूरा जल गया। और वह वहीं मर गया।

अब यह तो कहने की कोई बात ही नहीं है कि उस रात पहाड़ी पर बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

9 गीदड़ और मगर[16]

एक छोटा गीदड़ शैलफिश[17] खाने का बड़ा शौकीन था, खास कर के केंकड़ों का और दूसरे समुद्री सीपी जानवरों का।

एक बार उसने बिना कुछ देखे हुए अपना पंजा नदी में एक शैलफिश पकड़ने के लिये रखा – जो तुमको तो कभी नहीं करना चाहिये। तो ज़रा सोचो तो कि क्या हुआ....?

एक मगर उस समय नदी के किनारे कीचड़ में बैठा हुआ था। उसकी ऑखें कीचड़ से ढकी हुई थीं पर उसने अपनी जीभ पर कुछ महसूस किया सो "फटाक"। मगर ने गीदड़ का पंजा अपने जबड़े में दबा लिया।

अब गीदड़ को पता चल गया कि मगर अपना शिकार कैसे पकड़ता है। वह पहले उसको पकड़ता है, फिर वह उसको नदी में खींचता है, फिर वह उसको कीचड़ के पानी में घुमा घुमा कर वहीं डुबो देता है और जो कुछ भी वह पकड़ लेता है वह वही खा लेता है।

---

[16] The Jackal and the Alligator – a folktale from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=197
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[17] Shellfish – popular name for certain edible mollusks, for example, oysters, clams, and scallops etc

गीदड़ को अब बहुत जल्दी सोचना था कि वह उससे कैसे बचे नहीं तो वह मगर का शिकार बन जाता।

सो उसने हॅसना शुरू किया — "बूढ़ा मगर बहुत होशियार नहीं है। मुझे बहुत खुशी है कि मगर ने वह डंडी पकड़ ली है जो मैंने अपने पंजे की जगह पानी में डाली थी। मुझे उम्मीद है कि मगर को अपने मुॅह में लकड़ी के फॉसें बहुत अच्छी लगेंगी।"

मगर नदी के किनारे दूर कीचड़ में छिपा हुआ था सो वह यह नहीं देख पाया कि उसने क्या पकड़ा है।

गीदड़ की बात सुन कर मगर को यह तो पता चल गया कि निश्चित रूप से उसको लकड़ी की फॉसें नहीं खानी सो उसने अपना मुॅह खोल दिया और गीदड़ उसके मुॅह में से निकल गया।

मगर के मुॅह में से निकल कर गीदड़ फिर हॅस दिया — "ओ मिस्टर मगर, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद जो तुमने मुझे अपने मुॅह में से बाहर जाने दिया। तुम तो बहुत ही दयालु हो।"

यह सुन कर मगर तो अपने आपे से बाहर हो गया और गीदड़ वहॉ से जितनी जल्दी भाग सकता था भाग गया। मगर ने आगे मुॅह कर के उसको पकड़ना भी चाहा पर वह उसको पकड़ नहीं पाया।

इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि कई बार उसने अपनी पूॅछ पानी में फटकारी।

उसके बाद गीदड़ फिर एक हफ्ते तक नदी पर नहीं आया। पर उसका मन फिर से शैलफिश खाने को करने लगा। तो उसको तो बस नदी पर जाना था और खाने के लिये एक शैलफिश ढूँढनी थी।

सो वह फिर नदी के किनारे आया और नदी के किनारे पर चारों तरफ देखा पर उसको कोई ऐसा दिखायी नहीं दिया जो बूढ़े मगर जैसा दिखायी देता हो।

पर फिर भी वह कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता था। सो गीदड़ अपने आपसे ही ज़ोर से बोला — "जब मुझे किनारे पर कोई केंकड़ा दिखायी नहीं देता या मुझे वे पानी में से बाहर की तरफ झाँकते दिखायी नहीं देते तब उनको पकड़ने के लिये मैं अपना पंजा पानी में डालता हूँ।"

उस समय वह बूढ़ा मगर नदी की तली में कीचड़ में छिपा हुआ था। उसने सोचा — "अगर मैं ज़रा सी अपनी नाक पानी के बाहर निकाल लूँ तो वह केंकड़े जैसी लगेगी। फिर जब उसको पकड़ने के लिये गीदड़ अपना पंजा पानी में रखेगा तो मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

यह सोच कर मगर ने अपने मुँह का अगला हिस्सा बस ज़रा सा ही पानी के बाहर निकाला और गीदड़ के पानी में पंजा रखने का इन्तजार करने लगा।

गीदड़ ने भी यह सब देख लिया और बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहॉ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और जाना पड़ेगा।"

कह कर वह फिर हॅसा और बोला — "मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और फिर जितनी तेज़ी से वह वहॉ से भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं सका। इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि उसने फिर कई बार अपनी पूॅछ पानी में फटकारी।

उसके बाद गीदड़ फिर दो हफ्ते तक वहॉ नहीं आया। पर दो हफ्ते बाद फिर उसको नदी के किनारे की शैलफिश खाने की इच्छा हो आयी। असल में वे खाने में इतनी स्वादिष्ट होती थीं कि उससे रुका नहीं गया और वह फिर नदी के किनारे पहुॅच गया उनको खाने के लिये।

उसने फिर नदी के किनारे इधर उधर देखा पर उसको वहॉ मगर जैसा कोई दिखायी नहीं दिया पर अब उसने यह सीख लिया था कि अब उसे कोई खतरा मोल नहीं लेना।

सो गीदड़ फिर अपने आपसे ज़ोर से बोला — "जब मैं किनारे पर कोई केंकड़ा नहीं देखता या उनको पानी में से बाहर झॉकते नहीं देखता तब मैं उनको पानी के अन्दर से बुलबुले बनाते देखता हूॅ।

वे बुलबुले मुझे यह बताते हैं कि वे रसीले केंकड़े कहॉ हैं। फिर मैं अपना पंजा पानी में डाल कर उनको पकड़ लेता हूॅ और बस उन्हें खा जाता हूॅ।"

वह बूढ़ा मगर उस समय भी नदी की तली में कीचड़ में छिपा हुआ था। उसने सोचा — "अगर मैं अपनी नाक से थोड़े से बुलबुले पानी में बना दूॅ तो वह केंकड़े जैसे लगेंगे।

फिर जब गीदड़ उनको पकड़ने के लिये अपना पंजा पानी में रखेगा तो मैं उसको पकड़ लूॅगा और खा लूॅगा।"

यही सोच कर मगर ने अपनी नाक से पानी में बुलबुले बनाने शुरू कर दिये – पौप, पौप, पौप।

छोटे गीदड़ ने उन बुलबुलों को देखा तो बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहॉ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और जाना पड़ेगा। अब इसके बाद मैं यहॉ नहीं आऊॅगा।"

कह कर वह फिर हॅसा और बोला — "और हॉ मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और फिर जितनी तेज़ी से वहॉ से वह भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं पाया। इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि उसने फिर कई बार

अपनी पूँछ पानी में फटकारी और इस बार तो अपना मुँह भी कई बार खोला और बन्द किया और पैर भी पटके।

उसके बाद गीदड़ उस नदी के किनारे फिर नहीं गया हालॉकि उसकी केंकड़े खाने की बहुत इच्छा हो रही थी।

अब उसने एक बागीचा ढूँढ लिया था जहॉ जंगली अंजीर के पेड़ लगे हुए थे। उन पेड़ों की अंजीरें बहुत ही स्वादिष्ट और मीठी थीं सो वह उस बागीचे में पेड़ों से गिरी हुई अंजीरें खाने के लिये रोज जाने लगा।

बूढ़े मगर को भी यह पता चल गया कि छोटा गीदड़ अब नदी पर नहीं आता बल्कि अपना खाना खाने बागीचे जाने लगा है तो उसने भी उसी बगीचे में जाने का निश्चय किया कि वह भी वहीं जा कर उस छोटे गीदड़ के आने का इन्तजार करेगा।

उसको उस गीदड़ को जरूर खाना था चाहे उसको उसे आखीर में ही क्यों न खाना पड़े। सो वह नदी में से बाहर निकला और बागीचे की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसने अंजीर का सबसे बड़ा पेड़ ढूँढा और उसके नीचे अंजीरों का एक बहुत बड़ा ढेर बनाया और उसके पीछे छिप कर बैठ गया।

रोज की तरह गीदड़ उस दिन भी वहॉ आया पर अब तक वह होशियार रहना सीख गया था सो जब उसने अंजीरों का एक बहुत

बड़ा ढेर देखा तो उसने सोचा कि यह ढेर तो मगर के छिपने के लिये एक बहुत ही अच्छी जगह हो सकती है।

सो वह ज़ोर से बोला — "छोटी छोटी अंजीरें जो मुझे सबसे अच्छी लगती हैं ये वह वाली अंजीरें होती हैं जो मोटी, पकी हुई और रसीली होती हैं और जो जब हवा उनको इधर उधर हिला कर गिराती है तो हवा से वे अपने आप पेड़ से गिर जाती हैं। ये ढेर में पड़ी अंजीरें तो ठीक नहीं हैं खराब हैं।"

मगर ने सोचा — "मुझे थोड़ा सा हिलना पड़ेगा ताकि ऐसा लगे कि हवा इन अंजीरों को हिला रही है। जब वह छोटा गीदड़ इन अंजीरों को हिलते देखेगा तो इनको खाने आयेगा तब मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

सो मगर थोड़ा सा हिला जिससे वे अंजीरें इधर उधर उड़ कर गिरनी शुरू हुईं।

छोटे गीदड़ ने उन अंजीरों को इधर उधर गिरते हुए देखा तो बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहॉ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और ही जाना पड़ेगा।"

वह फिर अपनी हॅसी हॅसा और बोला — "और हॉ मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और यह कह कर फिर जितनी तेज़ी से वह वहॉ से भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं पाया। इस बात से वह फिर इतना गुस्सा हुआ कि उसने कई बार अपनी पूँछ फटकारी, कई बार अपना मुँह खोला और बन्द किया, कई बार पैर भी पटके और इस बार तो अपनी ऑखें भी घुमायीं पर कुछ नहीं हुआ।

पर मगर आज इतना गुस्सा और भूखा था कि वह गीदड़ का और इन्तजार नहीं कर सका। वह उसके घर तक पहुँच गया। उसने अपने बड़े शरीर से गीदड़ के घर के छोटे से दरवाजे में घुसने की पूरी कोशिश की।

जब वह उसके घर के अन्दर पहुँच गया तो वह घूमा और दरवाजे की तरफ मुँह कर के अपना बड़ा सा मुँह खोल कर गीदड़ के घर आने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी ही देर बाद गीदड़ घर आ गया पर वह जानता था कि कहीं जाने से पहले इधर उधर देखना चाहिये सो उसने अपने घर में घुसने से पहले अपने घर के सामने की जमीन देखी।

उसको लगा कि उसके ऊपर से कोई भारी सी चीज़ घिसट कर उसके घर के अन्दर तक चली गयी है।

फिर उसने अपना दरवाजा देखा तो उसने देखा कि उसका दरवाजा भी दोनों तरफ से कुछ टूटा हुआ था। इससे उसको लगा कि कोई काफी बड़ी चीज़ उसके अन्दर से हो कर गयी थी। उसने सोचा कि यकीनन ही मगर उसके घर के अन्दर है।

गीदड़ ज़ोर से चिल्लाया — "अरे बड़ी अजीब सी बात है। जब भी मैं घर आता हूॅ तो मेरा घर मुझसे बोलता है। मेरा स्वागत करता है पर आज इसे क्या हुआ? अरे ओ घर, रोज की तरह तुम मुझसे हलो क्यों नहीं बोलते?

तुम तो हमेशा ही यह कहते हो "हलो छोटे गीदड़। इस घर में स्वागत है तुम्हारा।" और इससे मुझे लगता कि यहॉ सब ठीक है और मैं अन्दर आ जाता हूॅ। पर आज तुम मुझसे बोले ही नहीं सो मुझे लगता है कि मेरे घर के साथ कुछ गड़बड़ है।"

बूढ़े मगर ने सोचा — "मुझे इस घर की तरह से बात करने का बहाना करना चाहिये ताकि छोटा गीदड़ घर के अन्दर आ सके।"

सो वह बड़ी मीठी सी आवाज में बोला — "हलो छोटे गीदड़। इस घर में स्वागत है तुम्हारा।"

यह सुन कर तो छोटा गीदड़ बहुत ही डर गया। अब उसको पूरा विश्वास हो गया था कि घर के अन्दर वह मगर ही था। उसको यह भी पता चल गया कि वह मगर उसको खाये बिना नहीं रहेगा।

छोटे गीदड़ ने सोचा — "अबकी बार मुझे इस मगर का खात्मा कर ही देना चाहिये इससे पहले कि यह मेरा खात्मा करे।

सो वह चिल्ला कर बोला — "मुझसे बात करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद ओ मेरे छोटे से घर। मुझे तुम्हारी आवाज सुन कर बहुत खुशी हुई।

मैं अभी अन्दर आता हूॅ। मैं ज़रा आग जलाने के लिये थोड़ी सी लकड़ी ले आऊॅ ताकि मैं अपना खाना पका सकूॅ। फिर मैं अपने दोस्तों को भी खाने के लिये बुलाऊॅगा।"

यह सुन कर मगर ने सोचा — "वाह यह तो बड़ा ही अच्छा रहेगा। गीदड़ के साथ साथ मुझे उसके दोस्त भी खाने के लिये मिलेंगे।" ऐसा सोच कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और शाम के खाने का इन्तजार करने लगा।

उधर छोटा गीदड़ वहॉ से जंगल चला गया। उसने बहुत सारी जलाने वाली लकड़ी इकट्ठी की और ला कर अपने दरवाजे पर और घर के चारों तरफ उनका ढेर लगा दिया।

फिर उनमें उसने आग लगा दी। जब उन लकड़ियों ने आग पकड़ ली तब वह अपनी हॅसी हॅसा और बोला — "मुझे छोड़ देने के लिये धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।"

आग जलती रही जब तक कि उसने मगर को पूरी तरह भून कर नहीं रख दिया। उसके बाद छोटे गीदड़ ने अपने दोस्तों को बुलाया और मगर की दावत की। अब वह नदी पर शैलफ़िश और बागीचे में अंजीर खाने के लिये आजाद था।

List of Stories of "Cunning Jackal"

1. Wolf and Jackal and the Barrel of Butter
2. Jackal and Monkey
3. The Tiger, the Ram and the Jackal
4. The Lion, the Jackal and the Man
5. The Lion and Jackal
6. The Jackal and the Wolf
7. The Man and the Snake
8. The Lion and Jackal
9. The Jackal and the Alligator

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**